Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-1 | Issue-4 | Dec-2023 | Page 21-27

दक्षिण कोसल की मध्यकालीन कला परंपरा में मिथुन प्रतिमाएं

[१]जगदेव राम भगत [२]डॉ. प्रदीप कुमार केशरवानी
[१]शोधार्थी, [२]प्राध्यापक व शोध निर्देशक
[१,२]इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर
[१]jrbhagat113@gmail.com

दक्षिण कोसल अर्थात वर्तमान छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा राज्य का संलग्न सीमावर्ती भूभाग ऐतिहासिक काल के स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष रूप से समृद्ध है। इस अंचल में मध्ययुगीन कला परंपरा के विस्तार क्षेत्र के अंतर्गत प्रमुख रूप से शैव, वैष्णव एवं जैन स्थापत्य कला के अवशेष स्थलों में मल्हार, सिरपुर, महेशपुर, भोरमदेव, देव बलोदा, आरंग, बारसूर, जांजगीर, पाली आदि स्थल विशेष रूप से उल्लेखनीय है। दक्षिण कोसल की कलाकृतियों में काम कला से संबंधित शिल्पकृतियों की भी बहुलता है। कामकला से संबंधित प्रतिमाओं की परंपरा के विपुल कलात्मक उदाहरण इस अंचल के सभी धार्मिक संप्रदायों के मंदिरों में कामकला से संबंधित मूर्तियां प्राप्त होती है। विष्णु मंदिर जांजगीर शिव मंदिर पाली आरंग स्थित जैन मंदिर में मिथुन प्रतिमाओं के अनेक भेद प्राप्त होते हैं इसी प्रकार की प्रतिमाएं गंडई, देवरवीजा तथा देव बलोदा के मंदिर में भी प्रदर्शित है जैन मंदिर आरंग में इस प्रकार की रोचक कलाकृतियां मंदिर के भित्तियों में प्रदर्शित है ऐसा ज्ञात होता है कि दक्षिण कोसल की प्राचीन मंदिरों के भित्तियों में प्रदर्शित मिथुन प्रतिमाओं की व्यापक स्थानीय परंपरा रही होगी। मध्यकालीन शिल्प शास्त्रों में नायिकाओं की मूर्तियों के अनेकानेक भेदों का विवरण है। आधुनिक काल में छत्तीसगढ़ के जनजातियों में प्रचलित विभिन्न प्रकार के आभूषण केश विन्यास तथा परिधान इस अंचल विशेष के नायिका प्रतिमाओं में देखने मिलती हैं तथा संस्कृत साहित्य के श्रृंगार शास्त्र से संबंधित विवरणों से भी परिलक्षित होती है। छत्तीसगढ़ अंचल सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से उत्कल, विदर्भ तथा दक्षिण भारत की राजवंशों से जुड़े रहने के कारण इस अंचल के मिथुन प्रतिमाओं में विविधता भी आभासित होती है। परवर्ती काल के अधिकांश मिथुन तथा नायिका प्रतिमाओं में न तो रेखाओं का सौंदर्य है न ही भावों की संपन्नता। ऐसे स्मारकों में मंडवा महल, शिव मंदिर, सरगांव, शिव मंदिर, देव बलौदा (भिलाई के समीप), विष्णु मंदिर, नारायणपुर, आदि स्थल महत्वपूर्ण है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-1 | Issue-4 | Dec-2023 | Page 21-27

दक्षिण कोसल की विशिष्ट प्राचीन पुरातत्व स्थल देवरानी मंदिर, ताला के प्रवेश द्वार के दायें द्वार शाखा पर आड़ीपट्टीनुमा मिथुनबद्ध है जिस पर मिथुन प्रतिमाएं अंकित है। इनमें से एक पर ऋषि पत्नी दंपति, दूसरे पर राजदंपति एवं तीसरे पर देवयोनि के सदृश्य मिथुन युगल अंकित है। लक्ष्मण मंदिर सिरपुर, तीवर देव विहार सिरपुर एवं राजीव लोचन मंदिर राजिम के प्रवेश द्वार की शाखों पर प्रदर्शित राजदंपतियुगल शील, सौंदर्य तथा भंगिमा की दृष्टि से अतुलनीय हैं। दक्षिण कोसल के प्रारंभिक काल के स्थापत्य कला अर्थात ६वीं से ९वीं–१०वीं सदी ईसवी के शिल्पकृतियों में यह प्रवृत्ति पाई जाती है। १०वीं ११वीं सदी ईसवी के दक्षिण कोसल में कल्चुरियों का प्रवेश प्रारंभ होने लगता है इस काल में छत्तीसगढ़ में ईटों से मंदिर निर्माण की परंपरा समाप्त होने और प्रस्तर से मंदिर निर्माण परंपरा का प्रारंभ होने लगता है। संपूर्ण मंदिर प्रस्तर से निर्मित होने के कारण अब शिल्पियों को देवालियों के निर्माण के साथ अधिकाधिक प्रतिमा और दक्षता की आवश्यकता होने लगी। अब मंदिर के जंघा, स्तंभ तथा अधिष्ठान पर भी देव प्रतिमाओं के साथ अलंकरणात्मक प्रतीत मिथुन प्रतिमाएं नायक नायिकाएं शार्दुल आदि शिल्पकृतियां मिलने लगती है।

मंदिर स्थापत्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग प्रवेश द्वार होता है। प्रवेश द्वार के दोनों द्वार शाखा अत्यंत अलंकृत होते हैं। इस पर रूपशाखा के नाम के शाखा पर सम्मुख भाग में छोटे–छोटे प्रकोष्ठ के बीच मिथुन दंपति अथवा मैथुन युगल प्रदर्शित करने की परंपरा स्थापत्य कला में विकसित होती दृष्टव्य होने लगते हैं। प्रत्येक द्वार शाखा में पृथक पृथक प्रकोष्ठों में अंकन किया जाता है एक औसत आकार के द्वार शाखा में लगभग तीन या चार प्रकोष्ठों में ये रूपायित प्राप्त होते हैं। इनमें अंकित मैथुन प्रतिमाएं अनेक प्रकार की होती हैं। विषम संख्या अर्थात दो पुरुष और एक नारी, कभी दो नारी और एक पुरुष कभी रति दृश्य का अवलोकन करते हुए पौरूष विहीन पुरुष जैसे दृश्य रूपायित मिलते हैं प्रवेश द्वार पर ऐसे मिथुन दृश्यों का रूपांकन प्राकृतिक अशुभों को रोकने अथवा उनसे मंदिरों के अंग उपांगों को अदृश्य आपत्तियों से सुरक्षित रखने के लिए किये जाने का उल्लेख मिलता है। मैथुन प्रतिमाओं के अंकन का एक अन्य उद्देश्य तद्युगीन समुदाय में सन्यास के प्रति बढ़ते मानसिकता को प्रवृति मार्ग की ओर आकर्षित करने के लिए एक उपाय के रूप में स्वीकार किया गया है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-1 | Issue-4 | Dec-2023 | Page 21-27

मध्ययुगीन काल परंपरा में मिथुन दंपति तथा मैथुन से संबंधित कलाकृतियों में तद्युगीन समाज में प्रचलित जटिल नैतिक मान्यताओं के विरुद्ध विकृति का आभास होता है। लावण्या के अभाव के कारण कहीं–कहीं ऐसी प्रतिमाओं में पाशविकता परिलक्षित होती है। फिंगेश्वर मंदिर के भित्ति में जड़ी हुई एक ऐसी ही कलाकृति प्रदर्शित है इस शिल्प कृति में एक भागती हुई निर्वस्त्र नारी के पीछे कमाचार के लिए एक निर्वस्त्र पुरुष पशु के समान पीछा करते हुए प्रदर्शित है। भोरमदेव से ज्ञात एक अन्य शिल्पकृति में सहवासरत् एक युगल को कटार पकड़े एक अन्य पुरुष प्रहार करने के लिए उद्यत है। ऐसे कलाओंकृतियों में शिल्पियों के द्वार यौन कुंठा तथा अपराध को चित्रित करने का प्रयास परिलक्षित होता है। मिथुन प्रतिमाओं को देव प्रतिमाओं के साथ अंकन करने का भारतीय परंपरा में मान्य पुरुषार्थ धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को शिल्पशास्त्र में विविध रूपों में प्रदर्शित किया गया है।

मध्ययुगीन काल परंपरा में मिथुन दंपति तथा मैथुन से संबंधित कलाकृतियों में तद्युगीन समाज में प्रचलित जटिल नैतिक मान्यताओं के विरुद्ध स्वेच्छाचार का आभास होता है। कही–कही लालित्य के अभाव एवं विद्रूपता के कारण ऐसी प्रतिमाओं में पाशविकता परिलक्षित होती है। फिंगेश्वर मंदिर के भित्तियों में जड़ी हुई एक कलाकृति में भागती हुई निर्वस्त्र नारी के पीछे कामशक्त पुरुष पशु के अदृश्य पीछा करते हुए प्रदर्शित है। भोरमदेव से ज्ञात एक शिल्प कृति में सहवासरत एक युगल पर एक अन्य पुरुष कटार से प्रहार करने के लिए उद्यत है। ऐसे कलाकृतियों में शिल्पियों द्वारा यौनाचार से जुड़े हुए सामाजिक संदर्भ में होने वाले अपराध को चित्रित करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। सामाजिक नैतिक बंधन और मर्यादाओं के विरुद्ध प्राचीन काल में भी विरोध की भावना के प्रकटी कारण जबरदस्ती के साथ सबल के द्वारा अनिच्छुक नारी के साथ होने वाले व्यवहार की झलक का भी संकेत मिलता है छत्तीसगढ़ के मिथुन प्रतिमाओं में कहीं–कहीं मौलिकता भी प्रदर्शित है। इस अंकन की ११वीं १२वीं सदी ईस्वी में निर्मित नारायणपुर नमक प्राचीन मंदिर में एक नायिका की जड़ी हुई प्रतिमा अपने वर्ग की विशिष्ट कलाकृति है इस कलाकृति में कामातुर नायिका अपने बाए हाथ में विषधर नाग सर्प को पकड़ी हुई है तथा सर्प के पूछ को योनि में प्रविष्ट कराने का प्रयास कर रही है जिससे कि उनकी काम पिपासा का शमन हो सके। शास्त्रों में कहा गया है की नारियों में पुरुषों की अपेक्षा असीम काम पिपासा होती है तथा वे कभी तृप्त नहीं होती है। इसके विपरीत

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-1 | Issue-4 | Dec-2023 | Page 21-27

पुरुषों में कामवासना स्त्री की अपेक्षा कम होती है प्राचीन शैली के कुछ चित्रों में विरहणी नायिका के अनेक प्रकार से चित्र मिलते हैं इनमें घनघोर अंधेरी रात में बरसते हुए मेघ से और भूमि में विचरण करते हुए विषधर नागो से बिना भयभीत हुए अभिसार के लिए जाती हुई नायिका चित्रित मिलते हैं। रीतिकालीन पदों में भी काम पिपासा से पीड़ित नारियों के संबंध में उपरोक्त ढंग से विवरण उपलब्ध होते हैं। शिल्पियों के द्वारा इस प्रकार की रूपायित कलाकृतियों से यह अनुमान होता है कि तद्युगीन शिल्पियों को कामशास्त्र का समुचित ज्ञान होता था। भोरमदेव के एक शिल्पकृति में समलैंगिक विकृति का अद्भुत प्रतिमा है जिसमें परस्पर विपरीत मुद्रा में अर्थात एक के सिर की और दूसरे पुरुष का पैर फैलाए मुख मैथुन (शिश्न पकड़कर चुसते हुये) प्रदर्शित हैं। इसी प्रकार गुदा मैथुन के भी दृश्यांक भी प्राप्त हुये है। इस प्रकार के विकृत मिथुन प्रतिमांए समाज में वाममार्गी तंत्र के प्रभाव का परिचायक प्रतीत होते है। लगभग १२वीं शती ईसवी के पश्चात मिथुन प्रतिमाओं में भाव सौन्दर्य क्रमश: विलुप्त होने लगता है और जड़ता दिखाई पड़ने लगती है।

छत्तीसगढ़ अंचल में मिथुन प्रतिमाओं में मानव जीवन के पुरुषार्थ के लिए पर्याप्त सम्मान रहा है क्षेत्रीय लोकगीतों में इसे अनुभव किया जा सकता है। श्रृंगार परक लोक गीतों में नर–नारी परस्पर आकर्षण से संबंधित गीतों के गायन से अपने उद्गार प्रकट करते हैं। साथ ही साथ इसके विद्रुप पक्ष से संबंधित शिल्पकृतियों के माध्यम से स्वेच्छाचार तथा अनैतिक घृणित रूपों का प्रदर्शन संभवत: इनके व्यापकता को प्रदर्शित करता है। अध्ययन–मानव–सत्संग सामाजिक मर्यादाओं तथा धार्मिक चेतना के द्वारा इनका सयंम और नियमन संभव है।

संदर्भ –

१. सतसई–बिहारी
२. गीत–गोविंद
३. गाथा–सप्तशती
४. खजुराहो में काम और दर्शन, डा. महेन्द्र वर्मा
५. उत्कीर्ण लेख, बालचन्द्र जैन
६. दक्षिण कोशल का ऐतिहासिक भूगोल, लक्ष्मीशंकर निगम

———०:०———

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-1 | Issue-4 | Dec-2023 | Page 21-27

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-1 | Issue-4 | Dec-2023 | Page 21-27

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा